“हे खुदा”

हे खुदा !

ये तूने कैसी दुनिया बनायी

इंसान तो बनाये पर उनमें इंसानियत न जगायी ।

सब कुछ दिया होगा लोगो को तूने

किसी को दौलत और किसी को शोहरत

पर क्या कभी दिया है किसी को

निश्छल निष्कपट कर्ण सा साथी ।

ये सब तो गिरगिट सा रंग बदलते है

इक पल के साथी दूजे पल दुश्मन का रूप धरते है

बिना दूसरे के मन को समझे

खुद को रिश्तो का बाप समझते है ।।

हो सकता है कुछ ने पाया हो

तेरा यह दोस्ती का अदभुत उपहार

पर शायद मेरे हिस्से कभी न आया

ऐसे साथियों का प्यार ।

जिन्होंने पाया उन्हे ही क्या तूने

इसे ताउम्र संभालकर रखने दिया

तुझसे उनका हँसता हुआ चेहरा देखा न गया

और चंद दिनो में ही उन्हे रूला दिया

कभी भी तूने उन रिश्तों को टिकने न दिया ।।

आज इंसान बनकर तू भी तो आ धरा पर

फिर देख जरा इस दुनिया की हालत

तुझे खुद भी रोना आयेगा

अपनी इस अनोखी रचना पर

पछताकर तू भी नरक को ही बेहतर पायेगा . . . . . ।।

Ankur Sharma

1st Yr' M.S. (CLIS)

IIIT Allahabad.